

मेडागास्कर

कचरे के ढेर से बना शहर

मेडागास्कर में हज़ारों लोग सुलगते कचरे के ढेर पर रहते थे। एक राजमिस्त्री ने उन्हें पत्थर तोड़ना और अपना शहर बनाना सिखाया।

कहाँ अंटानानारिवो

कौन पेद्रो ओपेका, एक पादरी और राजमिस्त्री जिन्होंने हज़ारों लोगों को नया शहर बनाने में मदद की

कब 1989 से 2026

4 मिनट में पढ़ें

पहला अध्याय

कहानी

1989 में मेडागास्कर में एक व्यक्ति सुलगते कचरे के विशाल पहाड़ पर पहुँचा। यह पहाड़ राजधानी शहर अंटानानारिवो के ठीक बाहर स्थित था। उसका नाम पेद्रो ओपेका था। उनका जन्म अर्जेंटीना में शरणार्थी माता-पिता के घर हुआ था। जब वे छोटे थे, तो उनके पिता ने उन्हें ईंटें जोड़ना सिखाया था। अब वे इस सुदूर द्वीप पर एक पादरी थे। उस पहाड़ पर उन्होंने जो देखा, उसने उनका दिल तोड़ दिया।

हज़ारों इंसान कचरे के उस ढेर पर ही जी रहे थे। परिवार फटी हुई प्लास्टिक और भीगे गत्तों की छोटी झोपड़ियों में सोते थे। नंगे पैर बच्चे सड़े हुए खाने और अस्पताल के कचरे में नंगे हाथों से कुछ ढूँढते थे। वे खाने के टुकड़ों के लिए आवारा कुत्तों और जंगली सुअरों से लड़ते थे। जलते हुए कचरे से दिन-रात गाढ़ा, बदबूदार धुआँ निकलता रहता था।

लोग खाँस रहे थे, बीमार थे और भूख से बेहाल थे। ज़्यादातर आने वाले लोग घिन से मुँह फेर लेते थे। पेद्रो उस रात सो नहीं पाए। वे जानते थे कि वे आँखें मूँदकर आगे नहीं बढ़ सकते।

गत्ते की झोपड़ी में एक वादा

पेद्रो मुफ़्त में रोटियाँ नहीं बाँटना चाहते थे। वे खोखले भाषण नहीं देना चाहते थे। वे जानते थे कि बिना मेहनत की मदद लोगों को लाचार बना देती है। मुफ़्त मदद एक दिन का पेट भरती है, लेकिन स्वाभिमान नहीं लौटाती।

अगली सुबह पेद्रो फिर से कचरे के ढेर पर पहुँचे। वे गत्ते की एक झोपड़ी में गए और मिट्टी के फ़र्श पर बैठ गए। उन्होंने माता-पिता की थकी हुई आँखों में देखा। उन्होंने कहा कि उनके पास देने के लिए पैसे नहीं हैं। उन्होंने कहा कि सिर्फ़ बातों से कुछ नहीं होगा। लेकिन अगर वे मेहनत करने को तैयार हैं, तो वे उनके साथ खड़े होंगे। वे मिलकर एक सच्चा भविष्य बनाएँगे।

पेद्रो ने कचरे के ढेर के पास ग्रेनाइट पत्थर की एक खड़ी पहाड़ी देखी थी। वे शहर गए और दोस्तों से थोड़ी-सी रक़म उधार ली। उन्होंने ज़रूरी औज़ार खरीदे: भारी हथौड़े, गैंती, फावड़े और ठेला गाड़ियाँ। फिर वे परिवारों के पास वापस आए। उन्होंने माता-पिता से पूछा कि क्या वे हथौड़ा चला सकते हैं। उन्होंने कहा हाँ।

अगले दिन सत्तर लोग उनके पीछे-पीछे उस पथरीली पहाड़ी पर चढ़े। उन्होंने पहले कभी पत्थर नहीं तोड़ा था। वे सिर्फ़ गंदगी में ज़िंदा रहना जानते थे। पेद्रो ने उन्हें चट्टान की प्राकृतिक दरारों को पहचानना सिखाया।

पत्थर का शहर खड़ा होता है

खुली खदान में काम बहुत कठिन था। धूप बहुत तेज़ थी और ग्रेनाइट का पत्थर बहुत सख़्त था। मर्द और औरतें सुबह से शाम तक चट्टान पर भारी हथौड़े चलाते रहे। उन्होंने बड़े-बड़े पत्थरों को तोड़कर नींव के पत्थर, फ़र्श की सिल्लियाँ और गिट्टी बनाई। दूसरे मज़दूरों ने ज़मीन से लाल मिट्टी खोदी और लकड़ी की आग में मज़बूत ईंटें पकाईं।

पेद्रो किसी पेड़ की छाँव में खड़े होकर हुकूम नहीं चलाते थे। उन्होंने खुद भारी हथौड़ा उठाया और सबके साथ पत्थर तोड़े। उनके हाथों में भी छाले पड़े और उनसे खून बहा। शाम को वे युवा मज़दूरों को गारा मिलाना सिखाते थे। उन्होंने उन्हें ईंटों की सीधी कतारें लगाना सिखाया।

हर परिवार ने घर बनाने में हाथ बँटाया। धीरे-धीरे पहाड़ी पर पहले छोटे पत्थर के घर खड़े होने लगे। इन घरों में असली खपरैल की छतें, साफ़ लकड़ी के फ़र्श और चमकदार दीवारें थीं। अपनी ज़िंदगी में पहली बार बच्चों के पास एक सूखा बिस्तर था। उनके पास चाबी वाला एक मज़बूत दरवाज़ा था।

उन्होंने अपने नए गाँव को एक नाम दिया: अकामासोआ। मालागासी भाषा में इसका मतलब होता है “सच्चे दोस्त”.

> “अकामासोआ को पैसों ने नहीं बनाया। इसे प्यार, विश्वास, मेहनत और दिन-प्रतिदिन एक-दूसरे की मदद ने बनाया।”
>
> पेद्रो ओपेका, अमेरिका मैगज़ीन से बातचीत में

कचरे के ढेर पर यह बात तेज़ी से फैल गई। और भी परिवारों ने अपने कचरे के थैले रख दिए और हथौड़े उठा लिए। उन्होंने सड़कें साफ़ कीं, पानी के कुएँ खोदे और पेड़ों की कतारें लगाईं। मौत की जगह अब ज़िंदगी की जगह में बदलने लगी थी।

नई ज़िंदगी के नियम

पेद्रो ने गाँव में रहने के लिए तीन साफ़ नियम तय किए। पहला नियम था स्कूल। हर बच्चे को हर दिन स्कूल जाना ज़रूरी था। किसी भी बच्चे को भीख माँगने या कचरा बीनने की इजाज़त नहीं थी। अगर माता-पिता बच्चे को स्कूल नहीं भेजते, तो परिवार गाँव में नहीं रह सकता था।

दूसरा नियम था काम। हर वयस्क को काम करना पड़ता था। कुछ लोग पत्थर की खदान में काम करते थे। दूसरे लोग बढ़ई बने, सड़कें पक्की कीं, कपड़े बुने या बगीचे लगाए। हर किसी को अपनी मेहनत की वाजिब मज़दूरी मिलती थी।

तीसरा नियम था शांति। किसी भी तरह की शराब, नशीली दवाओं या हिंसा की मनाही थी। जो पड़ोसी कभी सड़े हुए खाने के लिए लड़ते थे, वे अब दोस्तों की तरह रहना सीख गए। उन्होंने अपने मोहल्लों को सुरक्षित रखने के लिए पहरेदार चुने।

1989	18	14,000+
काम शुरू होने का साल	पत्थर से बने गाँव	आज स्कूल जाने वाले बच्चे

तीस सालों में पत्थरों की वह पहली बस्ती अठारह गाँवों में बदल गई। परिवारों ने सैंतीस स्कूल, स्वास्थ्य केंद्र, दवाखाने और खेल के मैदान बनाए। उन्होंने पुस्तकालय और सामुदायिक भवन भी बनाए।

आज पच्चीस हज़ार से ज़्यादा लोग पत्थर के इन साफ़ और रंग-बिरंगे कस्बों में रहते हैं। चौदह हज़ार से ज़्यादा बच्चे साफ़ पोशाक पहनकर हर सुबह स्कूल जाते हैं। कचरा बीनने वालों के कई बच्चे हाई स्कूल और कॉलेज पास कर चुके हैं। वे डॉक्टर, नर्स, मुंशी और शिक्षक बने हैं।

मेडागास्कर भर में पाँच लाख से ज़्यादा लोगों को सामुदायिक केंद्रों से इलाज, खाना या छत मिली है। यह परियोजना अब अपना अस्पताल भी चलाती है।

सितंबर 2019 में पोप फ्रांसिस ने अकामासोआ का दौरा किया। वे पत्थर की उस खदान में खड़े हुए जहाँ हज़ारों मज़दूर गा रहे थे। उन्होंने कहा कि उनका शहर साबित करता है कि गरीबी कोई अटल नसीब नहीं है। उन्होंने साबित कर दिया कि इंसान खुद को गंदगी से बाहर निकाल सकता है।

पेद्रो अब सफ़ेद दाढ़ी वाले बुज़ुर्ग हो चुके हैं। वे आज भी एक सादे कमरे में रहते हैं और काम के धूल भरे जूते पहनते हैं। सुलगते हुए कचरे के ठीक बगल में आज पत्थर का एक शहर खड़ा है। इसे उन्हीं हाथों ने बनाया है जो कभी कचरे में हाथ मारते थे।

कब क्या हुआ

- **1970** पेद्रो एक युवा मिशनरी के रूप में मेडागास्कर पहुँचे।
- **1989** उन्होंने कचरे के ढेर का दौरा किया और स्थानीय परिवारों के साथ अकामासोआ की शुरुआत की।
- **1990** परिवारों ने ग्रेनाइट की खदान शुरू की और अपने पहले पक्के घर बनाए।
- **2004** कई गाँवों में बने नए स्कूलों में हज़ारों बच्चे पढ़ने लगे।
- **2019** पोप फ्रांसिस ने पत्थर की खदान का दौरा किया और समुदाय के साथ उत्सव मनाया।
- **2021** पेद्रो और अकामासोआ को नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

ज़्यादातर राहत योजनाएँ मुफ़्त खाना और कपड़े बाँटती हैं। इस समुदाय ने लोगों को भारी हथौड़े दिए और पत्थर तोड़ना सिखाया। इन परिवारों को कोई शहर दान में नहीं मिला। उन्होंने हर दीवार खुद बनाई और हर सड़क अपने हाथों से तैयार की।

हमारी राय

दान किसी इंसान को एक दिन खाना खिला सकता है, लेकिन ईमानदारी की मेहनत उसका स्वाभिमान लौटाती है। पेद्रो ने दिखाया कि सच्चा बदलाव तब आता है जब आप लोगों के ऊपर नहीं, उनके साथ खड़े होकर काम करते हैं।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 लोगों के साथ मिलकर काम करें

पेद्रो दूर खड़े होकर सलाह नहीं देते थे। उन्होंने खुद भारी हथौड़ा उठाया और परिवारों के साथ मिलकर ग्रेनाइट के पत्थर तोड़े।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते किसी मुश्किल काम में किसी की मदद सिर्फ़ बात करके नहीं, उनके साथ काम करके करें।

2 मेहनत से आत्मसम्मान जगाएँ

वे मुफ़्त दान देने से बचते थे क्योंकि बिना मेहनत की मदद इंसान को कमज़ोर बना देती है।

यह आज़माएँ: जिसकी आप मदद करें उसे भी कोई सक्रिय ज़िम्मेदारी दें, ताकि उसे अपनी उपलब्धि पर गर्व हो।

3 बेकार चीज़ को ताकत बनाएँ

उन्होंने ग्रेनाइट की एक बंजर पहाड़ी को देखा और उसमें अपने घरों के लिए मज़बूत पत्थर ढूँढ लिए।

यह आज़माएँ: अपने घर या काम में किसी उपेक्षित साधन को पहचानें और इस हफ़्ते उसका सही इस्तेमाल शुरू करें।

4 **आगे बढ़ने की आदतों को सुरक्षित रखें**

उन्होंने बिना किसी छूट के हर बच्चे के लिए रोज़ स्कूल जाना अनिवार्य बना दिया।

यह आज़माएँ: अपनी पढ़ाई या सेहत के लिए एक ज़रूरी नियम तय करें और इस हफ़्ते हर दिन उसका पालन करें।

साथ ले जाने वाली एक बात

गरीबी कोई नसीब नहीं है। यह एक ऐसी दीवार है जिसे इंसानी हाथ गिरा सकते हैं।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

Vatican News
The Akamasoa Association in Madagascar: a city of friendship and hope

America Magazine
The anti-poverty project Pope Francis will visit in Madagascar

Republic of Slovenia
Prime Minister Janez Janša nominates Pedro Opeka for the Nobel Peace Prize

तथ्य-जाँच नोट: समय के साथ आबादी के आँकड़े बढ़ते रहे हैं। ज़्यादातर ख़बरों में यहाँ रहने वालों की संख्या 25,000 से 30,000 के बीच बताई गई है, और 500,000 से ज़्यादा लोगों को अस्थायी मदद मिली है। “हमारी राय” वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।